

Chapter 8

Ambition

We have heard people say that without ambition we cannot do anything. In our schools, in our social life, in our relationships with each other, in anything we do in life, we feel that ambition is necessary to achieve a certain end, either personal or collective or social or for the nation. You know what that word ambition means? To achieve an end, to have the drive, the personal drive; the feeling that without struggling, without competing, without pushing, you cannot get anything done in this world. Please watch yourself and those about you; and you will see how ambitious people are. The clerk wants to become the manager, the manager wants to become the boss, the minister wants to be the prime minister, the lieutenant wants to become the general. So each one has his ambition. We also encourage this feeling in schools. We encourage students to compete, to be better than somebody else.

All our so-called progress is based on ambition. If you draw, you must draw much better than anybody else; if you make an image, it must be better than that made by anybody else; there is this constant struggle. What happens in this process is that you become very cruel. Because you want to achieve an end, you become cruel, ruthless, thoughtless, in your group, in your class, in your nation.

Ambition is really a form of power, the desire for power over

महत्त्वाकांक्षा

लोगों से हम यह सुनते आए हैं कि यदि महत्त्वाकांक्षा न हो तो हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे विद्यालयों में, हमारे सामाजिक जीवन में, हमारे आपसी संबंधों में, जीवन में हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हमें ऐसा महसूस होता है कि किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महत्त्वाकांक्षा का होना आवश्यक है फिर वह लक्ष्य चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक हो, सामाजिक हो अथवा राष्ट्र से संबंधित हो। आप जानते हैं कि इस महत्त्वाकांक्षा शब्द का क्या अर्थ है? किसी ध्येय को प्राप्त कर लेना, उसके लिए चेष्टा करना, व्यक्तिगत प्रयत्न करना—यह भावना होना कि संघर्ष किए बिना, प्रतिस्पर्धा किए बिना, धक्का-मुक्की बिना इस संसार में आपको कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। कृपया स्वयं का अवलोकन करें, अपने आसपास के लोगों का अवलोकन करें और आप देखेंगे कि लोगों में कितनी महत्त्वाकांक्षा होती है। क्लर्क मैनेजर बनना चाहता है, मैनेजर मालिक बनना चाहता है, मंत्री प्रधानमंत्री बनना चाहता है और लेफ्टिनेंट जनरल बनना चाहता है। इस प्रकार प्रत्येक की अपनी कोई महत्त्वाकांक्षा हुआ करती है। विद्यालयों में भी हम इस भावना को प्रोत्साहित करते हैं। हम विद्यार्थियों को इसके लिए प्रेरित करते हैं कि वे प्रतियोगिता करें, किसी भी अन्य से श्रेष्ठ हो सकें।

हमारी सारी तथाकथित प्रगति महत्त्वाकांक्षा पर निर्भर होती है। यदि आप रेखांकन कर रहे हैं तो आपको किसी भी दूसरे की अपेक्षा अधिक सुंदर ढंग से इसे करना चाहिए, यदि आप कोई प्रतिमा या चित्र बनाते हैं तो वह अन्य किसी के द्वारा निर्मित प्रतिमा या चित्र से बेहतर होना चाहिए, इस प्रकार का एक संघर्ष निरंतर चलता ही रहता है। इस प्रक्रिया में होता यही है कि आप अत्यधिक क्रूर होने लगते हैं। चूंकि आप किसी ध्येय को पाना चाहते हैं इसलिए आप अपनी कक्षा में, अपने समूह में या अपने राष्ट्र में, जिस किसी भी स्तर पर क्यों न हों, क्रूर, निष्ठुर एवं संवेदनहीन होने लगते हैं।

महत्त्वाकांक्षा मूलतः स्वयं पर और दूसरों पर काबू

Chapter 8

myself and over others, the power to do something better than anybody else. In ambition, there is a sense of comparison, and therefore, the ambitious man is never really a creative man, is never a happy man; in himself he is discontented. And yet, we think that without ambition we should be nothing, we should have no progress.

Is there a different way of doing things, a different way of living, acting, building, inventing without ambition, without this struggle of competition in which there is cruelty and which ultimately ends in war? I think there is a different way. But that way means doing something contrary to all the established customs of thought. When we are seeking a result, the important thing to us is the result, not the thing we do, in itself. Can we understand and love the thing which we are doing without caring for what it will produce, what it will get us, or what name or what reputation we shall have?

Success is the invention of a society which is greedy, which is acquisitive. Can we, each one of us, as we are growing, find out what we really love to do—whether it is mending a shoe, becoming a cobbler, or building a bridge, or being a capable and efficient administrator? Can we have the love of the thing in itself without caring for what it will give us or what it will do in the world? If we can understand that spirit, that feeling, then, I think, action will not create misery as it does at the present time; then we shall not be in conflict with one another. But it is very difficult to

पाने की इच्छा का ही एक रूप है, एक सत्ताकांक्षा है जिसमें किसी दूसरे की तुलना में अधिक अच्छा करने का आग्रह होता है। महत्त्वाकांक्षा में तुलना कहीं-न-कहीं अवश्य छिपी होती है और इसलिए महत्त्वाकांक्षी मनुष्य वास्तव में कभी सृजनशील नहीं होता, वह कभी एक प्रसन्न मनुष्य नहीं होता, अपने भीतर वह सदैव असंतुष्टि ही अनुभव करता है। और फिर भी हमें यही लगता है कि महत्त्वाकांक्षा के बिना हम कुछ नहीं हो सकते, हम जुरा भी प्रगति नहीं कर सकते।

क्या काम करने का, जीवन को जीने का, आचरण करने का, रचनात्मक होने का ऐसा कोई तरीका नहीं हो सकता जिसमें महत्त्वाकांक्षा का स्थान ही न हो, जिसमें क्रूर, होड़ भरा संघर्ष हो ही न, जो कि अंततः युद्ध का कारण बनता है? मुझे लगता है कि एक दूसरा तरीका अवश्य है। परंतु उस रास्ते पर चलने का मतलब है विचार द्वारा स्थापित सारी रूढ़ियों के विपरीत कार्य करना। जब हम किसी परिणाम को पाने के लिए चेष्टा करने लगते हैं तो वह परिणाम ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है, न कि हमारे द्वारा किया जाने वाला कार्य। कार्य अपने आपमें गौण हो जाता है। अपने कार्य के परिणाम के रूप में हमें क्या मिलेगा, इसे करने से कौन-सा मान-सम्मान या प्रतिष्ठा हमें मिलेगी आदि की चिंता किए बिना क्या यह संभव है कि हम जो कर रहे हैं उसे हम समझें और उससे हमें प्रेम हो?

सफलता उस समाज का आविष्कार है जो लोभी है, जो संग्रह को महत्त्व देता है। जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे हैं, क्या हममें से हर एक इसका पता लगा सकता है कि हमें वस्तुतः क्या करना प्रिय है? चाहे वह जूतों की मरम्मत का काम हो, मोची बनना हो या पुल निर्माण का कार्य हो या फिर एक सक्षम और कुशल प्रशासक बनना हो? क्या हमारे लिए यह संभव है कि हमारे कार्य से हमें क्या मिलेगा अथवा दुनिया में इससे क्या होगा इसकी चिंता छोड़कर अपने कार्य से ही हम प्रेम कर सकें? यदि हम इस उमंग को, अपनी इस भावना को समझ सकें तो मुझे लगता है कि हमारे कार्य से वैसे क्लेश उत्पन्न नहीं होंगे जैसे कि इस समय हुआ करते हैं—तब हम आपस में झगड़ेंगे नहीं। किंतु आप सचमुच करना क्या चाहते हैं इसका पता लगाना बहुत कठिन है क्योंकि आपमें कितनी ही परस्पर-विरोधी आकांक्षाएं होती हैं।

Chapter 8

find out what you really love to do because you have so many contradictory urges. When you see an engine going very fast, you want to be an engine-driver. When you are young, there is an extraordinary beauty in the engine; I do not know if you have watched it. But later on that stage passes, and you want to become an orator, a speaker, a writer, or an engineer, and that too passes. Gradually, because of our rotten education, you are forced into a particular channel, into a particular groove. So you become a clerk or a lawyer or a mischief-monger, and in that job you live, you compete, you are ambitious, you struggle.

Is it not the function of education while you are very young, particularly in a school of this kind, to help to bring about such intelligence in each one of you that you will have a job which is congenial to you and which you love and want to do, and that you will not do a job which you hate or with which you are bored but which you have to do because you are already married, or because you have the responsibility of your parents, or because your parents say that you must be a lawyer when you really want to be a painter? Is it not very important, while you are young, for the teacher to understand this problem of ambition and to prevent it by talking it over with each one of you; by explaining, by going into the whole problem of competition? This will help you to find out what you really want to do.

Now we think in terms of doing something which will give us a

किसी इंजन को तेजगति से दौड़ते हुए देखकर आप इंजन-ड्राइवर बनना चाहते हैं। जब आप छोटे होते हैं तो इंजन में आपको एक विलक्षण सुंदरता दिखाई पड़ती है--पता नहीं आपने उसे कभी गौर से देखा है या नहीं। किंतु वह समय बीत जाता है और फिर आप एक कुशल वक्ता, लेखक या इंजीनियर बनना चाहने लगते हैं, और वह अवस्था भी बीत जाती है। हमारी इस सड़ी-गली शिक्षा-प्रणाली के फलस्वरूप आप किसी एक खास दिशा में, किसी लीक पर चलने के लिए विवश हो जाते हैं। फलतः आप बाबू, वकील या सबको चुकसान पहुंचाने वाले कोई व्यक्ति बन जाते हैं और उस कार्य के माध्यम से जीवनयापन करने लगते हैं, आप प्रतिस्पर्धा करते हैं, महत्त्वाकांक्षाएं रखते हैं, संघर्ष करते हैं।

शिक्षा का क्या यह काम नहीं है कि जब आप छोटे हों और इस प्रकार के किसी विद्यालय में पढ़ रहे हों तो वह आपमें ऐसी प्रज्ञा जाग्रत करे कि आप अपनी नैसर्गिक क्षमता के अनुकूल किसी ऐसी जीविका को अपना सकें जिससे आपको लगाव हो, जिसे आप करना चाहें, और आपको वैसा कोई काम-धंधा न करना पड़े जिसमें आपको अरुचि हो या जिससे आप ऊब जाते हों और जिसे आप केवल इसलिए कर रहे हों क्योंकि आपका विवाह हो चुका है या आपके माता-पिता की ज़िम्मेदारी आपके कंधों पर है या आपके अभिभावक आपसे कहते हों कि आपको वकालत करनी होगी जबकि आप वास्तव में चित्रकार बनना चाहते हैं? जब आप अभी छोटे हैं क्या इसी दौरान यह होना ज़रूरी नहीं है कि आपके शिक्षक महत्त्वाकांक्षा की इस समस्या को स्वयं भी समझें और आपमें से प्रत्येक से इस बारे में चर्चा करें, इसे ठीक से समझाते हुए, प्रतिस्पर्धा के समूचे प्रश्न पर गहराई से जांच-पड़ताल करें? इससे आपको यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि वस्तुतः आप क्या करना चाहते हैं।

इस बारे में वर्तमान में हम इस आधार पर सोचते हैं कि हम ऐसा कुछ करें जो वैयक्तिक रूप से

Chapter 8

personal benefit or a benefit to society or to the nation. We grow to maturity without maturing inwardly, without knowing what we want to do, but being forced to do something in which our heart is not. So, we live in misery. But society—that is, your parents, your guardians, your friends, and everybody about you—says what a marvellous person you are because you are a success.

We are ambitious. Ambition is not only in the outer world, but also in the inner world, in the world of the psyche, the spirit. There also we want to be a success, we want to achieve the greatest ideals. This constant struggle to become something is very destructive, it disintegrates, it destroys. Can't you understand this urge to 'become' and concern yourself only with being whatever you are, and then, from there, move on? If I am jealous, can I know I am jealous or envious, and not try to become nonenvious? Jealousy is self-enclosing. If I know I am jealous and watch it and let it be, then I will see that out of that something extraordinary comes.

The 'becomer,' whether in the outer world or in the spiritual world, is a machine, he will never know what real joy is. One will know joy only when one sees what one is and lets that complexity, that beauty, that ugliness, that corruption, act without attempting to become something else. To do this is very difficult because the mind is always wanting to be something. You want to become philosophers or become great writers, you want to become an M.A. But you see, such ambition is never a creative

हमें लाभ पहुंचाए या समाज अथवा राष्ट्र के लिए हितकर हो। भीतर से परिपक्व हुए बिना ही हम वयस्क हो जाते हैं, बिना यह जाने कि हम क्या करना चाहते हैं, हमें किसी ऐसे कार्य को करने के लिए बाध्य कर दिया जाता है जिसे हमारा हृदय बिल्कुल नहीं करना चाहता। इसलिए हम विपदा में जीते हैं। किंतु समाज अर्थात् आपके माता-पिता, आपके अभिभावक, आपके मित्र और आपको जानने वाले आपके इर्द-गिर्द के लोग सब यही कहते हैं कि आप कितने तेजस्वी हैं, कितने महान हैं क्योंकि आपको सफल समझा जाता है।

हम महत्त्वाकांक्षी हैं। महत्त्वाकांक्षा केवल बाहरी संसार में ही नहीं बल्कि हमारे मानसिक जगत में भी मौजूद होती है। उस जगत में भी हम सफल होना चाहते हैं, महानतम ध्येयों को पाना चाहते हैं। कुछ होने के लिए किया जाने वाला यह अनवरत संघर्ष अत्यंत विनाशकारी और विघटनकारी होता है। क्या आप कुछ 'होने' की लालसा को नहीं समझ पा रहे हैं? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप जो भी हैं आप बस उस पर ही अपना ध्यान दें और फिर वहीं से आगे बढ़ें? यदि मैं ईर्ष्यालु हूं तो ईर्ष्यारहित होने का प्रयास करने के बजाय क्या मैं बस इतना जान सकता हूं कि मैं ईर्ष्यालु या द्वेषपूर्ण हूं? ईर्ष्या हमें अपने आप में बंद कर सीमित कर देती है। यदि मुझे पता है कि मैं ईर्ष्यालु हूं और यदि मैं इसका निरीक्षण करूं, उसमें कोई दखल न दूं तो मैं देखूंगा कि तब कुछ असाधारण होता है।

कुछ बनने का प्रयत्न करने वाला, वह चाहे ऐसा प्रयत्न बाहरी संसार में कर रहा हो या आध्यात्मिक तल पर, एक यंत्र भर होता है, उसे कभी पता नहीं चलेगा कि वास्तविक आनंद क्या है। वास्तविक आनंद को केवल तब जाना जाता है जब कोई इसका अवलोकन करता है कि वह क्या है और उस जटिलता को, उस सौंदर्य को, उस कुरूपता को, उस विकारग्रस्तता को बिना कुछ और होने की चेष्टा किए यथावत रहने देता है। इसे करना बहुत कठिन होता है क्योंकि मन सदा कुछ-न-कुछ करते रहना चाहता है। आप दार्शनिक अथवा महान लेखक होना चाहते हैं, आप एम. ए. होना चाहते हैं। किंतु आप यह देखिए कि ऐसी महत्त्वाकांक्षा कभी भी सृजनशीलता नहीं होती। उस महत्त्वाकांक्षा में स्वस्फूर्ति नहीं होती

Chapter 8

thing. In that ambition there is no initiative because you are only concerned with success. You worship the god of success instead of understanding the ambition itself. However poor you may be, however empty, however dull, if you can see the thing as it is, then that will begin to transform itself. But a mind occupied in 'becoming' something never understands the 'being.' It is the understanding of what one is, the being of what one is, that brings an extraordinary elation, a release of creative thought, creative life.

All this is probably a bit difficult for the average student. As I said yesterday, you should discuss this with your teachers. Did you ask your teachers? Did you take ten minutes of your classtime for this? What happened to you; and what happened to the teacher? Could you tell me? Could you understand, through the teacher, what was said?

This morning, we are talking about something which is entirely different from the usual traditional approach to life. All the religious books, all our education, all our social, cultural approaches are to achieve, to become something. But that has not created a happy world, it has brought enormous misery. Hitler, Stalin, Roosevelt are all the result of that, so also are your particular leaders, past and present.

Ambition is the activity of an unhappy person, not of a happy person. But to live, to act, to think, to create, without ambition, is extremely difficult. Without understanding ambition, there cannot be creativity. An ambitious

क्योंकि तब आप केवल सफलता पाने के लिए व्यग्र होते हैं। तब आप स्वयं महत्त्वाकांक्षा को समझने के बदले सफलता को इष्ट बनाकर उसकी पूजा करने लगते हैं। आप चाहे कितने ही निर्धन हों, कितने ही रिक्त हों, कितने ही मंदबुद्धि हों, यदि आप यथावत इस चीज़ को देख सकें, तो यह अपने आपमें रूपांतरित होने लगती है। परंतु कुछ 'बनने' में फंसा मन 'वास्तविकता' को कभी नहीं समझ पाता। व्यक्ति जो है उसकी समझ और जो वह है उससे अभेद एक अनूठा उल्लास लाते हैं; तब सृजनशील विचार, सृजनशील जीवन का उद्भव होता है।

एक सामान्य छात्र के लिए शायद यह सब थोड़ा सा कठिन होगा। जैसा कि मैंने कल कहा था, इस बारे में आपको अपने शिक्षकों से चर्चा करनी होगी। क्या आपने अपने शिक्षकों से प्रश्न किए? क्या कक्षा के समय में से दस मिनट आपने इसके लिए दिए? इस बारे में आपने क्या किया, और आपके शिक्षकों ने क्या किया? क्या आप मुझे बताएंगे? जो कुछ कहा गया, क्या उसे आपने अपने शिक्षकों के माध्यम से समझा?

आज की सुबह, हम एक ऐसे विषय पर चर्चा करने जा रहे हैं जो कि जीवन के प्रति सामान्य परंपरागत दृष्टि से पूर्णतः भिन्न प्रकार का है। हमारी तमाम धार्मिक किताबें, हमारी समस्त शिक्षा, हमारे सारे सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण कुछ प्राप्त करने को, कुछ बनने को, महत्त्व देते हैं। परंतु उस तरीके से किसी सुखी संसार का सृजन नहीं हो पाया है, उसने तो भयावह व्यथाओं को ही जन्म दिया है। हिटलर, स्टालिन, रूजवेल्ट ये सभी उसके ही परिणाम हैं, और उसी तरह आपके अतीत एवं वर्तमान के नेतागण भी उसी का नतीजा हैं।

महत्त्वाकांक्षा एक खिन्न व्यक्ति की गतिविधि है, किसी खुशदिल इंसान की नहीं। परंतु महत्त्वाकांक्षा के बिना जीना, काम करना, सोचना और सृजन करना अत्यधिक कठिन है। महत्त्वाकांक्षा को समझे बिना सृजनशीलता संभव नहीं है। महत्त्वाकांक्षी मनुष्य कभी सृजनशील, उल्लास से भरा नहीं

Chapter 8

person is never a creative, joyous person; he is always tortured. But a man who feels the love of anything, the being of anything, is really creative; such a person is a revolutionary. A person who is a communist, a socialist, a congressman, or an imperialist cannot be revolutionary. The creative human being is inwardly very rich, and out of that richness, he acts and has his being.

Ask your teachers the implications of all that I have said, and find out if one can live without ambition.

We live now with ambition. That is our daily bread. But that bread poisons us, produces in us all kinds of misery, mentally and physically, so that the moment we are thwarted and prevented from carrying out our ambition, we fall ill. But a man who has the inward feeling of doing the thing which he loves without thinking of an end, without thinking of a result—that man has no frustrations, he has no hindrances, he is the real creator.

होता, वह सदा पीड़ित रहता है। किंतु जिसे किसी भी चीज़ से प्रेम होता है, जो किसी भी चीज़ के होने की गरिमा को महसूस करता है, वह वास्तव में सृजनशील होता है। ऐसा व्यक्ति क्रांतिकारी होता है। जो कम्युनिस्ट, समाजवादी, कांग्रेसी अथवा साम्राज्यवादी है वह कभी क्रांतिकारी नहीं हो सकता। सृजनशील मनुष्य आंतरिक समृद्धि से परिपूर्ण होता है और उससे ही प्रेरित होकर कोई काम करता है, वहीं उसकी अंतश्चेतना होती है।

मैंने जो कुछ कहा उसके गूढ़ तात्पर्य आप अपने शिक्षकों से पूछें और इसकी खोज करें कि क्या मनुष्य महत्त्वाकांक्षा के बिना भी जी सकता है।

अभी तो हम महत्त्वाकांक्षा के साथ ही जीते हैं। वह हमारी रोज़ की खुराक है। किंतु वह खुराक हमारे लिए विष के समान है—उससे हममें हर प्रकार के विषाद उत्पन्न होते हैं, मानसिक भी और शारीरिक भी, और इसलिए जब भी अपनी महत्त्वाकांक्षा को हम पूरा नहीं कर पाते या उसमें हम पीछे रह जाते हैं तो अस्वस्थ हो जाया करते हैं। लेकिन जिसे अपने कार्य से लगाव होता है, जिसके मन में उस कार्य को करने की आंतरिक उमंग होती है और जिसके मन में उस कार्य के लक्ष्य अथवा फल का कोई विचार तक नहीं उठता, वह कुंठाओं से मुक्त होता है, उसे बाधाएं विचलित नहीं करती, वह वस्तुतः सृजनशील होता है।